International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org October- 2016, Volume-3, Issue-5 Email- editor@ijesrr.org

गांधी का सपना मोदी की नजर से

डॉ0 ऊषा शाही
विभागाध्यक्ष – बी.एड. विभाग
सूरजमल अग्रवाल प्राइवेट कन्या
बी.एड.महाविद्यालय
किच्छा (ऊधम.सिंह.नगर)

भावना पाण्डेय्
प्रवक्ता – बी.एड.विभाग
देवभूमि इंसीट्यूट ऑफ
प्रोफेशनल ऐजुकेशन, लालपुर
रूद्रपुर (ऊधम सिंह नगर)

''जो शिक्षा चित्त की शुद्धि न करें , मन और इन्द्रियों को वश में रखना न सिखायें, निर्भयता और स्वावलम्बन पैदा न करें, निर्वाह का साधन न बनायें तथा स्वतन्त्र रहने का हौसला और सामर्थ्य न उपजाये, उस शिक्षा में चाहें जितनी जानकारी का खजाना, तार्किक कुशलता और भाषा पाण्डित्य मौजूद हो, वह सच्ची शिक्षा नहीं ।''

महात्मा गाँधी

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यदि दृष्टिगत् किया जाय तो महात्मा गाँधी का यह कथन अक्षरशः सत्य है, क्योंकि शिक्षा ही वह अवलम्ब है जिससे समस्त राष्ट्र, देश या समाज को परिवर्तित एंव विकसित किया जा सकता है।

शिक्षा मात्र अक्षर ज्ञान नही है वरन् व्यक्ति के आन्तरिक गुणों एंव कौशल को विकसित करने का साधन है। शिक्षा के मूल्यों को अनुभव द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षा की कोई भी योजना बनें उसमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसके द्वारा बालक में व्यवहार कुशलता विकसित हों। व्यवहारिक कौशल को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि बालक को कोई न कोई हस्त कार्य, निरीक्षण, अनुभव, प्रयोग,सेवा तथा प्रेम का आश्रय लेना होगा।

इस तथ्य को गाँधी जी ने आज से वर्षो पूर्व ही जान लिया था तथा तत्कालीन परम्परागत् शिक्षा के समानान्तर उन्होंने बुनियादी शिक्षा की अवधारणा प्रस्तुत की।

गाँधी जी ने लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति के कारण भारत की गिरती अवस्था को देखा और देश को इस अवस्था से उबारने के लिए उन्होंने एक मजबूत शिक्षा प्रणाली तथा पाठ्यक्रम देश के सम्मुख प्रस्तुत किया। उन्होंने हस्त कौशल को विकसित करने पर बल दिया। शिक्षा के महत्तवपूर्ण गुणों में एक है सृजनशीलता का विकास और नए युग की आवश्यकताओं के अनुरुप रचनाशीलता पैदा करना अर्थात व्यक्ति के कौशल को विकसित करना।

प्रत्येक बालक के अन्दर जन्मजात् कोई न कोई कौशल या योग्यता अवश्य होती है, और उसी कौशल के माध्यम से वह सृजन या रचना करता है। यदि शिक्षा बालक के इस गुण को विकसित करने में असमर्थ है तो वह हेय मानी जाती है, क्योंकि अन्ततः वह सामाजिक सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुसार मानस तैयार करने का माध्यम मानी जाती है।

मनुष्य पशु एंव मशीनों से बड़ा है – क्योंकि उसमें सृजन की प्रेरणा है। इसी प्रेरणा के सहारे वह ज्ञान विज्ञान का विकास करता है, साहित्य एंव कला की सृष्टि करता है, नए–नए विचार उत्पन्न करता है, नई शैलियों का निर्माण करता है, नए लक्ष्य बनाता है, नई – नई खोजे करता है क्योंकि यही सृजन की प्रेरणा कभी भी उसे निरर्थक या चैन से नही बैठने देतीा।

गाँधी जी ने इसी सृजन शक्ति को पहचान कर बालक के कौशल को विकसित करने की प्रेरणा दी। उनका कहना था कि शिक्षा मात्र पढ़ना, लिखना, सीखना नही है वरन् बालक के सर्वागीण विकास का माध्यम है। गाँधी जी का कथन है कि – '' शिक्षा से मेरा तात्पर्य है– बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुँमुखी विकास। ''

प्रचलित शिक्षा प्रणाली को परखें तो पता चलेगा कि इस शिक्षा प्रणाली में अनेक दोष हैं। दोष होना इस शिक्षा प्रणाली में स्वाभाविक भी है क्योंकि इस शिक्षा की रूप–रेखा उन लोगों के द्वारा तैयार हुई थी जो शासक थे और देश को गुलाम बनाये रखना चाहते थे। शिक्षा प्रणाली के इस दोष को सभी लोग स्वीकार करते है।

इसी सम्बन्ध में मालवीय जी का भी कथन है कि – ''यँहा प्रत्येक विद्यार्थी को बाध्य होकर अनेक विषय लेने पड़ते हैं, जो उन्हें तुच्छ क्लर्को के पदों के अतिरिक्त अन्य कार्यों के लिए अनुपयुक्त बना देता है। इसके लिए राज्य की ओर से अर्थकारी शिक्षा नीति अपनायी जानी चाहिए।''

अर्थात् विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा दी जायें जो व्यवहारिक हो। विद्यार्थी का न सिर्फ मानसिक विकास करें बल्कि उसे रोजगार के अवसर प्रदान करें। उसके अन्दर कौशल को विकसित करे जिससे शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् वह मात्र नौकरी पर निर्भर न रहें बल्कि स्वरोजगार कर सकें।

महामना मदन मोहन मालवीय ने 14 दिसम्बर 1929 को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अपले दीक्षान्त भाषण में शिक्षा के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा था कि – '' विद्यार्थियों को प्रयोगाात्मक ज्ञान के साथ कला– कौशल और व्यवसाय सम्बन्धी ऐसी शिक्षा दी जाए, जिससे देशी व्यवससाय और घरेलू धन्धों की उन्नति हो।''

यद्यपि मालवीय जी एंव गाँधी जी ने कौशल विकास पर ही ज्यादा बल दिया और उस समय की सामाजिक परिस्थिति एंव माँग के अनुरूप विद्यालयों में हस्त कला को केन्द्र में रखकर पाठ्य–क्रम का निर्माण किया।

वास्तविक शिक्षा वही है जो समाज व देश काल के अनुरूप परिवर्तित होती रहे, क्योंकि शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। यदि वह समयानुरूप परिवर्तित नहीं होगी तो राष्ट्र व समाज पिछड़ जायेगा।

प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर कोई न कोई विशिष्ट गुण होता है जो उसे अन्य व्यक्ति से अलग बनाता है। व्यक्ति अपने उस विशिष्ट गुण को जान नहीं पाता और न ही उसे विकसित कर पाता है। आवश्यकता है कौशल विकास के माध्यम से उसके उस गुण को विकसित करना।

किसी भी देश के विकास के लिए दो साधन महत्तवपूर्ण होते हैं – (1) जन ;2) धन

भारत का जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में दूसरा स्थान है। यदि प्रत्येक व्यक्ति के पास काम होगा तो राष्ट्र वैसे ही प्रगति के पथ पर अग्रसर हो जायेगा। यही सपना गाँधी जी ने देखा और इसी स्वप्न को माननीय मोदी जी साकार करना चाहते हैं।

भारत प्राचीन काल में विश्व गुरू के रूप में प्रसिद्ध था। यहाँ की सांस्कृतिक विरासत, कला–कौशल,शिक्षा,हस्त कार्य,उद्योग विश्व प्रसिद्ध था। परन्तु गुलामी के कारण धीरे–धीरे इसका पतन हर क्षेत्र में प्रारम्भ हो गया। आवश्यकता आज पुनः अपनी उसी प्राचीन धरोहर को सहेजने की है।

इसी उद्देश्य को लेकर मोदी जी ने '' मेक इन इण्डिया'' (25 सित0 2014) के संप्रत्य को दिया। अर्थात भारत को भारत बनाना नही बल्कि भारत को पुनः उसी शीर्ष पर पहुँचाना। शीर्ष स्थान प्राप्त करने के लिये आवश्यक है कि आज की आवश्यकता के अनुरूप युवाओं को ढालना। युवाओं में वह ऊर्जा है जिसके कारण वह किसी भी प्रकार के कार्य करने में सक्षम है।

गुलामी के कारण युवाओं की मानसिक धारणा परिवर्तित हो गयी है। आज वह पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध में खो सा गया है। आज युवाओं को डिग्री प्राप्त कर बेरोजगार रहना या कम वेतन में कोई कार्य करना तो पसन्द है परन्तु किसी हस्त कौशल को प्राप्त कर स्वरोजगार करना पसन्द नहीं और न ही समाज उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखता है। आवश्यकता है तो युवाओं एंव समाज के नजरिए को बदलने की।

भारत को उसकी प्राचीन गरिमा दिलाने के उद्देश्य से माननीय मोदी जी ने ' मेक इन इण्डिया' प्रोजेक्ट के अन्तर्गत कई योजनाओं की घोषणा की जैसे –

1 कौशल विकास (Skill Development) 2015
2 डिजीटल इण्डिया (Digital India) 2014
3 स्टार्ट अप इण्डिया (Start Up India)
4 स्वच्छ भारत अभियान

1 **<u>कौशल विकास (Skill Development)</u>** – कौशल विकास का अर्थ है खुद को विकसित करना अर्थात् कौशल का विकास करना मोदी जी ने कौशल विकास की योजना को काफी बल दिया। उनका मानना है कि जन शक्ति का जितना ज्यादा हम उपयोग करेंगें देश उतना ही विकास कर पायेगा। मोदी जी का मिशन है '' प्रत्येक हाथ का विकास।'' प्रत्येक व्यक्ति तभी काम कर सकता है जब वह किसी न किसी कौशल के प्रशिक्षण को प्राप्त किया होगा। कौशल को दो माध्यम से विकसित किया जा सकता है।

1 शिक्षा एवं प्रशिक्षण (Education and Training)
2 अनुभव विकास द्वारा (Developmental experiences)

प्रधानमंत्री का कहना है कि प्रत्येक गरीब एवं शोषित युवक विकास के इस युद्ध में एक सिपाही के समान है। यह मिशन सिर्फ कौशल विकास तक ही सीमित नहीं है वरन् उसे किसी न किसी उपक्रम से जोड़ना भी है। जिससे ज्यादा से ज्यादा युवा आकर्षित हो सकें।

यहाँ 70% युवा स्वंय को नौकरी के अन्तर्गत क्रिया–क्लाप एवं कार्य अधिगम से विकसित करते है जबकि 10% स्वंय प्रशिक्षण, कक्षा, सेमिनार, कार्यशाला के माध्यम से विकसित करते है।

भारत में 23% कार्य शक्ति औपचारिक कौशल प्रशिक्षण से प्राप्त होती है।

आज की जनशक्ति (Man Power) इस आर्थिक चुनौती को स्वीकार करने में सक्षम नही है।

यद्यपि भारत के पास 4 से 5 करोड़ अतिरिक्त जन शक्ति है जिसमें कौशल कों विकसित करके एंव उसके गुणों का उपयोग करके हम वैश्विक चुनौती का सामना कर सकते है।

इसी के मद्देनजर मोदी जी ने आई.आई.टी. की अपेक्षा आई.टी.आई. पर ज्यादा जोर दिया है, क्योंकि 21वीं शताब्दी में आई.टी.आई. ही गुणवत्ता पूर्ण कुशल जनशक्ति विकसित कर वैश्विक पहचान दिला सकता है।

इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक भारतीय चाहे वह स्त्री हो या पुरूष, शहरी क्षेत्र का हो या ग्रामीण, दलित पिछड़ा वर्ग हो या उच्च वर्ग सभी के कौशल को विकसित कर समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जाना चाहिए।

2 **डिजिटल इण्डिया (Digital India)** – आधुनिक युग की कल्पना विज्ञान एंव प्रौद्योगिकी के बिना संभव ही नही है। इस तकनीकी के युग ने आज संसार, देश, समाज व व्यक्ति को बदल कर रख दिया है।

सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से अमीर व गरीब के बीच की दूरी को मिटाने के उद्देश्य से 1 जुलाई 2015 को नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम से डिजिटल इण्डिया सप्ताह का शुभारम्भ माननीय मोदी जी ने किया।

इस योजना का उद्देश्य भारत में ऐसी सोच विकसित करना है जिसमें हम ऐसे डिजिटल उत्पादों का निर्माण कर सकें जो देश की जनता के अनुरूप व उसकी भाषा में ही हों। इस कार्यक्रम में नव प्रर्वतन (Innovation) पर विशेष बल दिया गया है।

इस कार्यक्रम में देशी व विदेशी कम्पनियाँ भारत में 4.50 लाख करोड़ का निवेश करेंगी तथा इस निवेश से देश में नए रोजगार के अवसर पैदा होंगें।

डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम से जुड़ी मुख्य योजनाएं –

1 ई लॉकर – इसके माध्यम से हम अपने अति आवश्यक दस्तावेजों को डिजिटली संरक्षित रख सकते है। कुछ समय बाद सरकारी कार्यालयों द्वारा भी कर्मचारियों के दस्तावेजों को एक लिंक द्वारा डिजिटल लॉकर में सुरक्षित रखा जाने लगेगा।

2 ई साइन (डिजिटल हस्ताक्षर)– यह नागरिकों को डिजिटल आधार पर प्रमाणीकरण का उपयोग कर दस्तावेजों पर ऑन लाइन हस्ताक्षर करने की सुविधा प्रदान करेगा।

3 ई बैग (ई बस्ता) – इसके माध्यम से छात्र किसी भी राज्य के किसी भी बोर्ड की प्रत्येक पुस्तक को न केवल पढ़ सकेंगें बल्कि निः शुल्क डाउनलोड भी कर सकेंगें। इससे पढ़ने में रूचि के साथ–साथ किताबों का बोझ भी कम होगा।

4 ई अस्पताल (ई–स्वास्थ्य) – इसके माध्यम से ऑन लाइन भुगतान, रिपोर्ट पंजीकरण, पूछ–ताछ, रक्त की उपलब्धता एवं स्वास्थ्य से सम्बन्धित प्रत्येक पहलुओं की सेवाएँ प्राप्त की जा सकेंगी। दूर–दराज क्षेत्र तथा गाँवों तक मेडिकल की सेवा पहुँच सकेगी तथा बड़े अस्पतालों में भी कतार में नही खड़ा रहना पड़ेगा।

5 भारत नेट योजना – गाँवों में उच्च गति की ब्रॉडबैण्ड सेवा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से इस योजना का शुभारम्भ किया गया। इस योजना के अन्तर्गत वर्ष 2017 तक देश की 25 लाख ग्राम पंचायतों में उच्च गति ब्रॉड बैण्ड सेवा पहँचाने का लक्ष्य रखा गया है।

6 माय गाँव डॉट इन (My .in) – इसके माध्यम से जहाँ नागरिकों की भागीदारी को बढ़ावा देने में सहायता प्राप्त होगी वहीं इससे सरकार की जवाबदेही भी सुनिश्चित की जा सकेगी। इससे पारदर्शिता बढ़ेगी एवं भ्रष्टाचार कम होगा।

7 स्वच्छ भारत मिशन मोबाइल एप्लीकेशन – नागरिकों तथा सरकारी संगठनों द्वारा प्रदेश में लाई जाने वाली यह एप्लीकेशन स्वच्छ भारत मिशन (एस.बी.एस) के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होगें।

8 ऑन लाइन ट्रेडिंग – इसके माध्यम से किसानों को अपने कृषि उत्पाद की ऑन लाइन खरीद–बिक्री की जानकारी प्राप्त होगी। देश के किसी भी कोने से प्रत्येक जगह अपनी वस्तुओं का क्रय – विक्रय कर सकेगा। इससे

जँहा किसानों को सस्ते दामों पर मण्डियों में अपने उत्पाद बेचने की मजबूरी से छुटकारा मिलेगा, वहीं समय की बचत होगी।

यही पर मोजी जी एम.गवर्नेन्स की बात करते है। एम.गवर्नेन्स अर्थात् मोबाइल गवर्नेन्स। इससे सम्बन्धित चार योजनाओं को प्रारम्भ किया गया है जिसमें सर्वाधिक प्रमुख मोबाइल फोन कनेक्शन है। जिसके माध्यम से ही पहचान सत्यापित करने की सुविधा है। साथ ही उन्होने भारतीय उद्यमियों को साइबर सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने को कहा है।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने देश में वैज्ञानिक शोधों को आसान बनाने की बात कही। उन्होनें इन्जिनियरिंग तथा वैज्ञानिक शोध के लिए पाँच सिद्धान्तों को रखने की बात कही जिसे 5ई (5E) मन्त्र कहा गया है वे है–

1 (Economy) इकोनॉमी (अर्थ व्यवस्था)
2 (Environment) एन्वायर्नमेण्ट (पर्यावरण)
3 (Energy) एनर्जी (ऊर्जा)
4 (Empathy) एम्पैथी (संवेदना)
5 (Equity) इक्विटी (निष्पक्षता)

प्रधानमंत्री ने माना कि इन पाँच सिद्धान्तों का पालन करने से विज्ञान का प्रभाव सर्वाधिक होने की सम्भावना बनी रहती है। 500 से अधिक वैज्ञानिकों तथा विशेषज्ञों को सम्बोधित करते हुए मोदी जी ने आर्थिक वृद्धि, रोजगार के अवसर इत्यादि के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की उपलब्धियों को सराहनीय माना।

3 स्टार्ट अप इण्डिया (Start up India) – प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा प्रारम्भ की गयी यह एक ऐसी योजना है जो उन लोगो को सुनहरे सपने देखने के लिये उत्साहित करेगी जिनके पास कौशल है, नवीन खोज करने का सामर्थ्य है लेकिन पैसा नही है। यह मोदी जी का एक महत्तवकांक्षी प्रोजेक्ट है।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने 15 अगस्त 2015 को अपने भाषण में लाल किले की प्राचीर से इस योजना के खाके को देश के समक्ष रखा तथा बाद मे नई दिल्ली के विज्ञान भवन से विधिवत इसकी शुरूआत की ।

इस अवसर पर मोदी जी ने कहा कि हमारी सरकार स्टॉट अप अभियान को प्राथमिकता के साथ प्रारम्भ करने जा रही है। उन्होने जनता से अपील की कि आप हमें बताइयें हमें क्या करना चाहिए क्योंकि लोगों के पास हजारों नई योजनाएँ या कल्पनाएँ होती है और यदि वह चाहें तो कमाल कर सकते है।

तकनीकी से जुड़कर लोग अपनी बात कहीं भी पहुँचा सकते है। आधुनिक युग में कम्प्यूटर के ऐसे कई ऐप्लीकेशन है जिनसे बहुत फायदे है। उदाहरण देकर उन्होने कहा कि मैने स्वंय अपने एप का लाभ देखा है।

मोदी जी ने कहा कि किसी भी नवीन कार्य को प्रारम्भ करने के लिये एक बार खतरा लेना आवश्यक है इसके लिये पैसा मायने नही रखता। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि हमें आज इस वैश्विक युग में ई कामर्स के क्षेत्र में दो कदम और आगे बढ़ना है। स्टार्ट अप इण्डिया के माध्यम से वह देश के युवाओं को नौकरी ढूढंने के स्थान पर (Job Seeker) नौकरी देने वाला (Job Creator) बनाना चाहते है।

इस अभियान के लिये सरकार के निम्न योजनाएँ है –

- स्टार्ट अप के लिये स्वयं प्रमाण पत्र प्रेषित करने की प्रणाली होगी। तीन साल तक किसी भी स्टार्टअप के निरीक्षण के लिये कोई भी अधिकारी नही जायेगा।
- स्टार्ट अप इण्डिया हब बनाना।
- स्टार्ट अप के लिए एप्लीकेशन और वेब पोर्टल प्रारम्भ होगा, मात्र एक साधारण फार्म के द्वारा पंजीकरण करवाना होगा। इस तरह पंजीकरण कराना बहुत ही सरल होगा।
- स्टार्ट अप के लिये पेटेंट एप्लीकेशन करने की फीस में 80% की कटौती होगी।
- स्टार्ट अप के लिये एग्जिट की व्यवस्था । 90 दिन के भीतर स्टार्ट अप एग्जिट हो जाए ऐसी व्यवस्था करने के लिये संसद बिल लाया गया है।
- तीन साल तक स्टार्ट अप को सेवा कर में छूट मिलेगी।
- महिलाओं के लिये विशेष व्यवस्था ।
- अटल इनोवेशन की स्थापना, जिसका उद्देश्य प्रतिभा को बढ़ावा देना है।
- पी.पी.पी. मॉडल भी इसमें शामिल किए गए है और 35 मॉडल है।
- बायो टेक्नॉलोजी को बढ़ावा देने हेतु 7 नए रिसर्च सेंटर्स प्रारम्भ करने की तैयारी जिसके लिए सरकार 100 करोड़ देगी।

- छात्रों के लिए (इनोवेशन) के कोर्स प्रारम्भ किए जाएँगे और 5 लाख स्कूलों में 10 लाख बच्चों पर फोकस कर उसे बढ़ावा दिया जाएगा।

सरकार की इस पहल का असर यह हुआ है कि 103वीं भारतीय विज्ञान कॉंग्रेस के दौरान विद्यार्थियों ने नवाचार तथा स्थानीय तकनीकों के माध्यम से अपने इनोवेटिव आइडियाज के मॉडल प्रस्तुत किए जिनमें इन मॉडल्स को बेहतर माना गया।

1 **सेफ्टी बस –** बसों के पलटने से होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने के लिए केरल की टी. अपूर्वा ने हाइड्रोलिक कम्प्रेसर पिस्टन पम्प को जोड़कर एक डिवाइस तैयार की। कम्प्रेसर की मोटर को बस की दोनों सतहों पर पॉवर स्विच से जोड़ दिया। बस पलटने पर बटन दबने से बस हर तरफ से खुल सकती है। आग की स्थिति में पानी की बौछार हो सकती है।

2 **एक्सपेण्डिबल कार –** नाबित महाजन, आयुष सिंहल,सराह सुजान तथा सुमान्यु दत्ता ने कार में जोड़ने वाली लकड़ी का ढाँचा तैयार किया। इसे न्यूमैरिक पिस्टन, स्लाइडर,सोलेनोएड वॉल्व जैसे उपकरणों की सहायता से चार सीटों वाली कार को आठ सीटों वाली कार बनाया जा सकता हैं। हाइड्रोलिक लीवर दबाते ही कार में जगह बढ़ जाएगी।

3 **मल्टी पर्पज व्हीकल –** भीलवाड़ा (राजस्थान) के स्कूली छात्र प्रवीण सिंह ने जे.बी.सी. मशीन में सुधार कर मल्टी पर्पज व्हीकल का ढांचा बनाया है। मशीन के निचले हिस्से में हाइड्रॉलिक जैक लगा कर लम्बाई बढ़ाई जा सकती है। बाढ़ राहत के लिए भी इस व्हीकल का उपयोग किया जा सकता है।

4 **स्वच्छ भारत अभियान –** 'स्वच्छ भारत अभियान' भारत सरकार द्वारा आरम्भ किया गया राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जिसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा अधो संरचना को साफ सुधरा करना है। इस अभियान की घोषणा 2 अक्टूबर 2014 को हुई। महात्मा गांधी ने अपने आस–पास के लोगो को स्वच्छता बनाए रखने सम्बन्धी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय अभियान 25 सितम्बर 2014 से 31 अक्टूबर 2014 के बीच केन्द्रीय विद्यालय एंव नवोदय विद्यालय के संगठन में आयोजित किया गया। इस दौरान की जाने वाली गतिविधियों में शामिल है –

- स्कूल कक्षाओं के दौरान प्रतिदिन बच्चों के साथ सफाई और स्वच्छता के विभिन्न पहलुओं पर SBA विशेष रूप से महात्मा गांधी की स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य से जुड़ी शिक्षाओं के सम्बन्ध में बात की।
- कक्षा, प्रयोगशाला, पुस्तकालय की सफाई।
- स्कूल में स्थापित किसी भी मूर्ति या स्कूल की स्थापना करने वाले व्यक्ति के योगदान के बारे में बात करना एंव मूर्तियों की सफाई।
- शौचालय एंव पीने के पानी वाली क्षेत्रों की सफाई।
- रसोई और सामान गृह की सफाई।
- खेल के मैदान की सफाई।
- स्कूल के बगीचों का रखरखाव व सफाई।
- स्वच्छता पर प्रतियोगिता, निबन्ध व वाद–विवाद।

इसके अतिरिक्त फिल्म,शो, स्वच्छता पर निबन्ध पेंटिग एंव प्रतियोगिताएँ नाटको आदि के आयोजन द्वारा स्वच्छता एंव अच्छे स्वास्थ्य का संदेश प्रसारित करना।

सप्ताह में दो बार आधे घण्टे सफाई अभियान शुरू करने का भी प्रस्ताव रखा गया है।

ग्रामीण क्षेत्रों के लिए स्वच्छ भारत मिशन – निर्मल भारत अभियान कार्यक्रम भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा ग्रामीण क्षेत्रों में लोगो के लिए माँग आधारित एवं जन केन्द्रित अभियान है, जिसमें लोगो की स्वच्छता सम्बन्धी आदतोंको बेहतर बनाना, सुविधाओं की माँग उत्पन्न करना और स्वच्छता सुविधाओं को उपलब्ध करना, जिससे ग्रामीणों के जीवन स्तर को बेहतर बनाया जा सके।

अभियान का उद्देश्य पाँच वर्षो में भारत को खुला शौच से मुक्त देश बनाना है। अभियान के तहत देश में लगभग 11 करोड़ 11 लाख शौचालयों के निर्माण के लिए एक लाख चौंतीस हजार करोड़ रूपए खर्च किए जाएँगे। बड़े पैमाने पर प्रौद्योगिकी का उपयोग कर ग्रामीण भारत में कचरे का इस्तेमाल उसे पंजीकरण रूप देते हुए जैव उर्वरक और ऊर्जा के विभिन्न रूपों में परिवर्तित करने के लिए किया जायेगा।

अभियान को युद्ध स्तर पर प्रारम्भ कर ग्रामीण आबादी और स्कूल शिक्षकों और छात्रों के बड़े वर्गो के अलावा प्रत्येक स्तर पर इस प्रयास में देश भर की ग्रामीण पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद को भी इससे जोड़ना है। अभियान के

एक भाग के रूप में प्रत्येक पारिवारिक इकाई के अन्तर्गत व्यक्तिगत, घरेलू शौचालय की इकाई लागत को 10000 से बढ़ाकर 12000 रू0 कर दिया गया है और इसमें हाथ धोने, शौचालयों की सफाई एवं भण्डारण को भी शामिल किया गया है।

शहरी क्षेत्रों के लिये स्वच्छ भारत मिशन – मिशन का उद्देश्य 1.04 करोड़ परिवारों को शिक्षित करते हुयें 2.5 लाख सामुदायिक शौचालयों, 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय और प्रत्येक शहर में एक ठोस अवशिष्ट प्रबंधन की सुविधा प्रदान करता है। इन कार्यक्रमों के तहत आवासीय क्षेत्रों में जंहा व्यक्तिगत, घरेलू शौचालयों का निर्माण करना मुश्किल है वहाँ सामुदायिक शौचालयों का निर्माण करना । पर्यटन स्थल, बाजार, बस स्टेशन, रेलवे स्टेशन जैसे प्रमुख स्थानों पर भी सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण किया जायेगा। यह कार्यक्रम पाँच साल की अवधि में 4401 शहरों में लागू किया जाएगा। कार्यक्रम पर खर्च किए जाने वाले 62009 करोड़ रूपए में केन्द्र सरकार की तरफ से 14623 करोड़ रूपए उपलब्ध कराए जाएँगे। केन्द्र सरकार द्वारा प्राप्त होने वाले 14623 करोड़ रूपयो में से 7366 करोड़ रूपयें ठोस अवशिष्ट प्रबंधन पर 4165 करोड़ रू0 व्यक्तिगत घरेलू शौचालय, 1828 करोड़ रू0 जनजागरूकता पर और सामूदायिक शौचालय बनवाए जाने पर 655 करोड़ रू0 खर्च किए जाएंगें । इस कार्यक्रम द्वारा खुले हुये शौच, अस्वच्छ शौचालयों को फ्लश शौचालय में परिवर्तित करनें, मैला ठोने की प्रथा का उन्मूलन करने, नगर पालिका ठोस अवशिष्ट प्रबंधन और स्वस्थ एवं स्वच्छता से जुड़ी प्रथाओं के सम्बन्ध में लोगो के व्यवहार में परिवर्तन आदि शामिल है।

यदि हम सभी योजनाओं पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि इस तरह का सपना गाँधी जी ने देखा था। गाँधी जी ने जिस राम राज्य की कल्पना की थी आज माननीय मोदी जी ने उस सपने को साकार करने का संकल्प लिया है। आवश्यकता है हमें स्वस्थ दृष्टिकोण को अपनाने की । तभी हम वैश्विक पटल पर पुनः अपनी प्राचीन गरिमा को प्राप्त कर पायेंगें और सोने का भारत कहलायेंगें। जब स्वच्छता, विकास और नवाचार होगा। जिसमें न तो राजनीति हो, न धर्म हों और न ही ऊँच – नीच का भाव हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- ऐजुकेशन थॉट एण्ड प्रेक्टिस , आर. लाल।
- भारत 2016, पब्लिकेशन डीविजन।
- द मेकिग ऑफ इण्डिया, ए हिस्टोरिकल सर्वे, रनबीर बोरा 2001,एम.ई.शेप आरमान्क,न्यूयार्क लन्दन,इंग्लैंड।
- गांधी और डीवी, प्रो0 लक्ष्मी नारायण व प्रो मदन मोहन ,न्यू कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण 2009।
- समसामायिकी महासागर पत्रिका, मार्च 2016 ,अरिहन्त पब्लिकेशन्स, मेरठ।
- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार , डॉ0 सी.एस.शुक्ला,अनुभव पब्लिकेशन्स हाउस,इलाहाबाद।
- विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा,प्रो0 एम.पी.रूहेला,अग्रवाल पब्लिकेशन्स,आगरा, 2007–2008।